RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल.-011/2021-23

ओ३म्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 48, अंक : 4 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 9 मई, 2021

विक्रमी सम्वत् 2078, सृष्टि सम्वत् 1960853122

दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–48, अंक : 4, 6-9 मई 2021 तदनुसार 27 वैशाख, सम्वत् 2078 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

यज्ञकर्त्ता का नाश नहीं

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

नू चित्स भ्रेषते जनो न रेषन्मनो यो अस्य घोरमाविवासात्।
यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत्स राय ऋतपा ऋतेजाः।।

-ऋ० ७।२०।६

शब्दार्थ- नू+चित् = क्या कभी सः = वह जनः = मनुष्य भ्रेषते = भ्रष्ट होता है, हानि उठाता है? न = नहीं रेषत् = हिंसित होता, यः = जो अस्य = इसके मनः = मन्तव्य को घोरम् = कष्ट क्लेश सहकर भी आ +विवासात् = पालन करता है। यः = जो मनुष्य यज्ञैः = यज्ञों के द्वारा इन्द्रे = परमात्मा में दुवांसि = पूजाओं को दधते = अर्पण करता है, सः = वह ऋतपाः = ऋतरक्षक ऋतेजाः = ऋतपुत्र =धर्म-पुत्र रायः = धनों को क्षयत् = बसाता है।

व्याख्या- जब कोई भगवान् के मार्ग पर चलने लगता है, तो संसारी जन उसे डराते हैं, कहते हैं खाओ, पियो, आनन्द करो। प्रत्यक्ष को छोड़कर क्यों अप्रत्यक्ष=परोक्ष के पीछे भागते हो, क्यों अपनी जवानी का नाश करते हो? अहो! भोगविलास, विषयवासना में यौवन नष्ट नहीं होता!

पूर्वार्ध का एक अर्थ और भी है-सचमुच वह मनुष्य नष्ट हो जाता है, जो मन को डुलाता हुआ इस संसार के घोर [भयङ्कर दुःखदायी] विषय-समूह का सेवन करता है। विषय तो विष हैं, विषैले सर्प हैं। काले से डसा कोई नहीं बचता। विषय में तो धन जाए, मान जाए और छोड़ जाएँ स्वजन। वेद बहुत मार्मिक शब्दों में कहता है-

पिता माता भ्रातर एनमाहुर्न जानीमो नयता बद्धमेतम्।।

-ऋ० १०।३४।४

बाप, माँ, भाई कहते हैं, हम इसे नहीं जानते, बेशक इसे बाँधकर ले-जाओ। सब सम्बन्धी पराये बन जाते हैं, व्यसनी का कोई अपना नहीं बनता। वेद कहता है-

ऋणावा बिभ्यद्धनमिच्छमानोऽन्येषामस्तमुप नक्तमेति।।

-ऋ० १०।३४।१०

ऋण की कामनावाला डरता है, ऋण की चाह है, डर का मारा रात को दूसरे के घर जाता है।

व्यसनी घोर व्यसनों में पड़कर सम्पत्ति नष्ट कर बैठता है। अब ऋण लेने लगा है। कुछ दिन तक सुविधा में ऋण मिलता रहता है। ऋण वह वापस नहीं करता। ऋणदाता तङ्ग करता है, ऋणी डरकर अपने घर नहीं आता। कितनी दुर्दशा है? इस विपत्ति से बचने के लिए वेद कहता है-

मा नो घोरेण चरताभि धृष्णु।

-ऋ० १०।३४।१४

धृष्टता करके, ढिठाई को सामने रखकर घोर आचरण मत करो।

बुराई के मार्ग में ढीठ लोग ही जाते हैं। व्यसनों से धननाश बताकर धनरक्षा का सच्चा, वास्तविक उपाय भी वेद बताता है-

यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत्स राय ऋतपा ऋतेजाः।।

जो यज्ञों द्वारा भगवान् की सेवा-पूजा करता है, वह ऋतरक्षक=धनरक्षक ऋतेजा=ऋतपुत्र=धर्मपुत्र धनों को बसाता है।

धन चञ्चल हैं। आज एक के पास हैं, कल दूसरे के पास भागते रहना, स्थान बदलते रहना धन का स्वभाव-सा है, किन्तु जो दान में लगाता है, उसके पास बस जाता है। जो इसे रखना चाहे, उसके पास रहता नहीं। जो इसे दूर करे, उसके पास भागा जाता है। कैसी विचित्रता है!

सागर सूर्य को जल देता है। सूर्य उसे सभी जगह बरसाता है, किन्तु सभी स्थानों का जल दौड़कर अन्त में सागर में जाता है। जो सागर में नहीं जाता, वह या तो सड़ाँद पैदा करता है या सूख जाता है। यही दशा धनसम्पत्ति की है, दे डालो तो निश्चिन्ता। संभालकर रखो, चोर-चकार, राजा का भय।

दान को वेद की परिभाषा में यज्ञ कहते हैं। सब धन भगवान् का है। उसी ने सबको दिया है, जो इस तत्त्व को समझकर 'त्वदीयं वस्तु सर्वात्मन् तुभ्यमेव समर्पये [तेरी वस्तु प्रभो! तुझे ही अर्पण करता हूँ] की भावना से भगवान् के निमित्त दे डालते हैं, वे सचमुच यज्ञ करते हैं।

यज्ञ में द्रव्य डालते हैं। उससे वृष्टि होती है, वृष्टि से धनधान्य होता है, वह फिर याज्ञिक के पास आता है और हुत द्रव्य से अधिक मात्रा में आता है, अतः धन का सच्चा उपयोग, धन का सच्चा बचाव यज्ञ में है, किन्तु यज्ञ के स्वरूप को समझ लो। ऋग्वेद ७।२१।२ में यज्ञानुष्ठान का फल बताया है, उससे यज्ञ का स्वरूप थोड़ा-सा समझा जा सकता है, अतः उस मन्त्र को यहाँ उद्धत करते हैं-

प्र यन्ति यज्ञं विपयन्ति बर्हिः सोममादो विदथे दुध्रवाचः।
न्यु ष्रियन्ते यशसो गृभादा दूरउपब्दो वृषणो नृषाचः।।

जो लोग उत्तमता से यज्ञानुष्ठान करते हैं, वे हृदयाकाश में विशेषरूप से पहुँचते हैं, सोमरस से सदा मदमाते रहकर विदथे=शास्त्र संग्राम में वे धर्षक वाणी वाले होते हैं [अर्थात् उनके आगे सबकी बोलती बन्द हो जाती है], वे सचमुच कीर्ति के घर से लाये जाते हैं। उनकी वाणी दूर तक जाती है। वे सुखवर्षक तथा लोकसंग्राहक होते हैं।

यज्ञानुष्ठान करने वालों की प्रत्यभिज्ञान=पहचान इस मन्त्र में बतायी गई है-१. वे हृदयाकाश में विशेषरूप से पहुँचते हैं, अर्थात् वे विवेकी, विचारी तथा धारणा-ध्यान के धनी होते हैं, २. इस कारण वे शान्तिरस से सदा मस्त रहते हैं, योगी से अधिक शान्ति किसको मिल सकती है? ३.और इसी कारण उनकी वाणी में बड़ी शक्ति रहती है, उनकी वाणी से सभी को दबना पड़ता है, मौन होना पड़ता है, ४. और इसी से उनकी महती कीर्ति होती है, मानो वे साक्षात् कीर्तिगृह से लाये जाते हैं, ५. उनकी वाणी दूर तक जाती है, अर्थात् उनके उपदेश-आदेश का प्रभाव दूर तक पहुँचता है, ६. वे महाबली होते हैं तथा सब पर सुख की वृष्टि करते हैं और ७. इन गुणों से नृषाच=जनसाधारण से मिलते-जुलते हैं और सबको अपनी सहायक, सहयोगी, सहकारी बना लेते हैं, अर्थात् यज्ञ का अर्थ हुआ लोक-संग्रह, लोकविग्रह यज्ञ नहीं हो सकता। (स्वाध्याय संदोह से साभार)

मान्तः स्थुर्नो अरातयः

ले.-प्रो. ओम कुमार आर्य वैदिक प्रवक्ता, जींद

शीर्षक वाला मंत्रांश ऋग्वेद के एक मंत्र का अन्तिम हिस्सा है। मन्त्र अथर्ववेद और ऐतरेय ब्राह्मण में भी आया है। आइये, पहले मन्त्र को देख लें कि क्या कहता है-

ओ३म् मा प्र गाम पथो वयम्। मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः। मान्तः स्थुर्नो अरातयः।।

ऋ. 10.57.1 अथर्व 13.1.59 ऐ ब्रा. 3.1 इस मन्त्र में मुख्यतः तीन बातों पर जोर दिया गया है। एक, हम सुपथ से कभी विचलित न होवें। दो, हम यज्ञादि शुभ कार्यों से दूर न जायें। तीन, अदानी= अदानशील (कृपण) व्यक्ति हममें वास न करें। अथवा यह भी कि अदानशीलता, अदानत्व, कृपणता के भाव कभी हमारे मन में वास न करें। तीनों बातों पर हम चर्चा करेंगे, किंतु विस्तार से विमर्श तीसरे खण्ड पर करना है अर्थात् 'मान्तः स्थुर्नो अरातयः' इस लेख का मुख्य विवेचन विषय है।

आइये प्रथम खण्ड को लें कि सुपथ से कभी विचलित न होवें। प्रश्न पैदा होता है कि पथ, पंथ या सुपथ = सुपंथ क्या है? महाभारतकार ने तो यह कहकर मामला निपटाया कि पंथ अनेक हैं, किसे चुनें, किसे छोड़ें, यह विकट समस्या है। इसलिये यही कहना उचित है कि महाजनो येन गतः स पन्था महापुरुष, विद्वज्जन, सदाचारी लोग, आप्त पुरुष जिस पथ पर चलते आये हैं, बस वही पथ रास्ता अनुगमनीय है। ऐसे पथ को छोड़कर दुष्टों, दुरात्माओं, कुत्सित कदाचारियों के कुसंग में रहकर यदि हम कुपथ पर चलते हैं तो सिवाय विनाश के और कोई अञ्जाम हो ही नहीं सकता। वेद स्पष्ट चेतावनी देता है-

ओ३म् मा न समस्य दूढयः परिद्वेषसो अंहतिः।
ऊर्मिर्न नावमा वधीत्।।
ऋ. 8/75/9

अर्थात् यदि कोई धर्मात्मा विद्वानों का साथ छोड़कर दुर्बुद्धि व्यक्तियों के कुसंग में फँस जाता है, उसका नाश इस प्रकार होता है जैसे महासागर की क्रुद्ध, बिफरी उत्ताल लहरें नौकाओं को डुबोकर नष्ट कर देती हैं। इसलिये हम स्वस्ति पन्थामनुचरेम से विचलित होकर यदि अस्वस्ति पंथ का अनुगमन करते हैं, तो विनाश निश्चित है। अतः **मा प्र गाम पथो वयम्** यह हमारा संकल्प होना चाहिए। नीतिकार ने भी **न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः** अपने इस कथन से उक्त संकल्प की पुष्टि की है।

वेद मंत्र का अगला खण्ड कहता है कि हम यज्ञ से कभी दूर न हटें। **मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः,** हे ऐश्वर्यशाली इन्द्र हमें सामर्थ्य दो, नैतिक दृढ़ता दो कि हम समस्त ऐश्वर्यों के स्रोत यज्ञ को कभी न त्यागें। शतपथकार ने **यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म** कहकर यज्ञ की महिमा का गायन किया है। वस्तुतः यज्ञ अकेला श्रेष्ठ कर्म नहीं है। जितने भी शुभ और श्रेष्ठ कर्म हैं उन सबकी संज्ञा यज्ञ है। यज्ञ कामधेनु है, यज्ञ पारसमणि है। वेद ने भी **अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः** कहकर यज्ञ की प्रशस्ति को गाया है। महाभारतकार का मानना है कि वेदाध्ययन का एक शुभ फल यह है कि व्यक्ति यज्ञ से जुड़ जाता है। **अग्निहोत्रफला वेदाः** अस्तु।

अब हमें मंत्र के तृतीय और अंतिमाँश पर ध्यान देना चाहिए। मानव समाज के लिये, हमारे दैनंदिन जीवन के लिये, परस्पर व्यवहार के लिये जो अत्यंतावश्यक वस्तु है, उसकी ओर इंगित करते हुए मंत्र निषेध शैली में कहता है कि **मान्तः स्थुर्नो अरातयः** अर्थात् हममें कोई भी 'अराति' न हो। अराति शब्द विरोधी, द्वेष रखने वाले, शत्रु के अर्थ में प्रयुक्त होता है। किन्तु यहाँ इसका अर्थ है, अदानी दान न देने वाला, कृपण, कदर्य, कंजूस। वैसे कृपणादि शब्द अराति की भावना को एक सीमा तक ही व्यक्त करते हैं। अराति और अराव्ण दोनों ही लगभग समानार्थी हैं। अराति की तरह अराव्ण भी समाज में नहीं होने चाहिएं, इसीलिए तो वेद कहता है-

अपघ्नन्तो अराव्ण-ऋ. 9.63.5

अदानियों का नाश करते हुए हम अपना ऐश्वर्य बढ़ायें, समस्त संसार को श्रेष्ठ बनायें। यहाँ यह समझ लेना बहुत जरूरी है कि प्रस्तुत मत्राँश यह कहता है कि हमारे बीच कोई अदानी न हो अथवा हमारे मनों में अदानशीलता, कृपणता, कदर्यता के भाव न हों, तो अर्थापत्ति यह हुई कि हम दानशील होवें। हमारे स्वभाव में दानशीलता, दानवृत्ति होनी चाहिए। ऊपर बताया जा चुका है कि हम यज्ञ से दूर न हटें, जिसका सीधा सा अर्थ है कि हम पूज्य जनों के सत्कार (देवपूजा), अच्छा संग (संगतिकरण) और दान देने की सुप्रवृत्ति से कभी दूर न हटें। दान, प्रतिदान, आदान, प्रदान की नींव पर ही मनुष्य समाज टिका हुआ है। जहाँ भी आदान प्रदान बाधित हो जाता है वहीं पर समाज में नाना प्रकार के दोष, विकार पैदा हो जाते हैं और मनुष्य समाज की उन्नति रुक जाती है। विषमता, शोषण, उत्पीड़न, असहायों, दीनहीनों पर भयंकर अत्याचारादि यह सब अदानशीलता, अनुदारता, बेहिसाब परिग्रह वृत्ति के ही भयावह दुष्परिणाम हैं। इसीलिए वेद स्पष्ट घोषणा करता है-

देहि मे ददामि ते, नि मे धेहि नि ते दधे।
-यजु. 3/50

अर्थात् दो, बदले में पाओ। इस नियम को तोड़ोगे तो समाज को विनाश के कगार की ओर धकेलोगे। सृष्टि के आदि में प्रजापति ने जो अपनी तीन सन्तानों को 'द' उपदेश दिया था वह सदा-सदा के लिये प्रासंगिक है, सार्थक है, हितकारी है। प्रजापति ने कहा था-

देवताओं के लिये 'द' अर्थात् 'दाम्यत' अपनी कुप्रवृत्तियों, पतनकारी वासनाओं, घातक कुविचारों का सतत् दमन करते रहो ताकि तुम्हारा देवत्व बरकरार रहे। सावधानी हटी कि पतन की दुर्घटना घटी, कोई बचा नहीं सकता।

मानव समाज के लिये 'द' अर्थात् दान भावना को सदा अपनाये रखो। द=दत्त दान देते रहो, समाज को आगे बढ़ाते रहो। ज्यों ही अदान भावना मनुष्यों पर हावी होगी, त्यों ही मनुष्य समाज पतन के भयावह गर्त में गिर जायेगा। और दानवों के लिये 'द' से तात्पर्य था 'दयध्वम्' अर्थात् दूसरों पर दया करो, दया भावना ही तुम्हें दानव से मानव और फिर देव बना सकती है और कोई अन्य उपाय है ही नहीं।

अतः प्रजापति का 'द' उपदेश हम मानवों को दान का महत्त्व समझाता है। आज भी सावन भादों की काली-काली घटाओं का द-द-द करके गड़गड़ाहट पूर्ण गर्जन, नदी नालों का द-द-द करते हुए तीव्र गति से बहते जाना, आँधी, तूफान का कर्णभेदी हुँकार महासागर की उत्ताल झालों को द-द-द करके सागर तट से टकराना, फिर पीछे लौट जाना, हम मनुष्यों को प्रजापति के 'द' (दान) उपदेश का स्मरण करवाता है और सचेत करता है कि दान-भावना त्यागी नहीं, राति से अराति, रावण से अराव्ण बने नहीं कि तुम्हारे सामने समस्याओं का अम्बार लगा नहीं। याद रहे कि कितनी ही सुन्दर, आदर्श व्यवस्था क्यों न हो, यदि मनुष्य अदानशीलता, परिग्रह, संचयादि के चक्रव्यूह में फँसा रहा तो देव सवेर अशांति, अफरा तफरी, अव्यवस्था फैलेगी, कोई ताकत रोक नहीं सकती।

निष्कर्षतया हम कह सकते हैं कि दान भावना हम सबके लिये सुखों का आधार है। वहीं अत्यन्त लोभ, लालच, संग्रह भावना, हर चीज को अपने यहाँ मुष्टिबद्ध रखना दुःखों का प्रमुख कारण है। आचार्य चाणक्य तो यह मानते हैं कि दान से धनैश्वर्य का शुद्धिकरण होता है। गोस्वामी तुलसीदास स्पष्ट घोषणा करते हैं कि

पानी बाढयो नाव में अरु घर में बाढयो दाम।
दोनों हाथ उलीचिये यही सयानो काम।।

सन्त कबीरदास का कथन है-

चिड़ी चोंच भर ले गई नदी न घटियो नीर।
दान दिये धन न घटे कह गये दास कबीर।।

अतः हमें यथा सामर्थ्य दान परंपरा को आगे बढ़ाते रहना चाहिये। दान-यज्ञ में हमारी आहुति अवश्य पड़ती रहनी चाहिये। आइये विवेच्य मंत्र की भावना को इन शब्दों में गुनगुनायें-

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

3 मई अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस पर लाखों लोगों ने एक साथ यज्ञ किया

पिछले एक वर्ष से कोरोना महामारी ने सम्पूर्ण विश्व में भयंकर कहर मचा रखा है। यह महामारी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। हमारा देश इस समय एक भयानक महामारी के दौर से गुजर रहा है। प्रतिदिन लाखों की संख्या में लोग इस वायरस से संक्रमित हो रहे हैं। प्रतिदिन हजारों लोग इस महामारी में अपनी जान गंवा रहे हैं। महामारी के इस भयानक दौर में हमारा देश ऑक्सीजन की कमी से भी जूझ रहा है। चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है। ऐसी विकट परिस्थितियों में लोगों को एकजुट करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने 3 मई 2021 रविवार को प्रात: 9:00 बजे एक साथ यज्ञ करने का आह्वान किया था। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने सार्वदेशिक सभा के आह्वान पर सम्पूर्ण पंजाब की आर्य जनता से आग्रह किया था कि 3 मई को हम सभी मिलकर यज्ञ करें। सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के आदेशानुसार पूरे पंजाब में आर्यजनों ने एक साथ यज्ञ किया। पूरे विश्व में लाखों लोगों ने एक साथ यज्ञ करके नया कीर्तिमान स्थापित किया है। यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है। यज्ञ के द्वारा हमें भौतिक और आध्यात्मिक दोनों लाभ प्राप्त होते हैं। यज्ञ के द्वारा वातावरण शुद्ध होता है, अनेकों बीमारियाँ दूर होती हैं, विचार शुद्ध होते है, हमारे अन्दर की नकारात्मकता दूर होती है। यज्ञ का उद्देश्य सर्वे भवन्तु सुखिन: की भावना को अपनाना है। यज्ञ भारतीय संस्कृति का आधार स्तम्भ है। सर्वे भवन्तु सुखिन: की भावना को धारण करने के लिए ही 3 मई को इस विशाल महायज्ञ का आयोजन किया गया था। पिछले वर्ष भी 3 मई को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आह्वान पर पूरे देश भर में लाखों लोगों ने एक साथ यज्ञ किया था।

पूरा विश्व इस समय कोरोना महामारी से लड़ रहा है। इस महामारी का सबसे बड़ा एक कारण यह भी है कि हमने प्रकृति के साथ बहुत खिलवाड़ किया है। प्रकृति का संरक्षण करने के स्थान पर प्रकृति का दोहन किया है। विकास के नाम पर जंगलों को, पहाड़ों को काटा गया। उसके परिणामस्वरूप आज हम अनेक प्रकार की समस्याओं से जूझ रहे हैं। आज जिस प्रकार से ऑक्सीजन की कमी हो रही है, लोगों को सांस लेने की मुश्किल हो रही है। अगर समय रहते इस समस्या की ओर ध्यान नहीं दिया तो आने वाले समय में पीठ पर ऑक्सीजन का सिलेंडर लेकर चलना पड़ेगा। हमारी प्राचीन वैदिक पद्धति से इस सभी समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है परन्तु हमने अपने ऋषि मुनियों द्वारा बताए गए मार्ग पर चलना भी छोड़ दिया। अपनी प्राचीन संस्कृति को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति की ओर आकर्षित हो गए, जिसके कारण हमारे घरों में हवन करना छूट गया। शाकाहार के स्थान पर माँस पकाया जाने लगा। अपनी जीभ के स्वाद के लिए बेजुबान जानवरों की हत्या की जाने लगी। आज उसी के भयंकर दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं और हम उससे बचने के ऊपाय ढूँढ रहे हैं। अगर अभी भी हम इस समस्या से छुटकारा पाना चाहते हैं तो हमें अपनी प्राचीन संस्कृति की ओर लौटना पड़ेगा। जब हम अपनी भारतीय संस्कृति के अनुसार आचरण करेंगे, अपना खान-पान सात्विक करेंगे, योग प्राणायाम के द्वारा अपने इम्युनिटी सिस्टम को ठीक रखेंगे तो हम इस महामारी से बच सकते हैं।

प्राचीन वैदिक संस्कृति के गौरव को पुन: लौटाने के लिए गत वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक साथ यज्ञ करने का आह्वान किया था। हमारी वैदिक संस्कृति में यज्ञ का अत्यधिक महत्व है। यज्ञ करने से अनेक प्रकार के विषैले कीटाणुओं को समाप्त किया जा सकता है। इसलिए एक साथ होने वाले यज्ञ से वातावरण के ऊपर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर लाखों लोगों ने वेदमन्त्रों के साथ यज्ञ करते हुए इस वायरस को समाप्त करने का प्रयास किया था। आज डॉक्टर भी इस बात को मानने लगे हैं कि यज्ञ के द्वारा वातावरण से कीटाणुओं को समाप्त किया जा सकता है तथा ऑक्सीजन की कमी को पूरा किया जा सकता है। हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पहले ही इस बात को कह दिया है यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म अर्थात् यज्ञ सबसे श्रेष्ठ कर्म है। यज्ञ करने वाले स्वस्थ और सुखी रहते हैं। आज हम पुन: इस अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस के द्वारा अपने ऋषि-मुनियों की परम्परा की ओर लौटने का प्रयास कर रहे हैं। अगर हम इस उद्देश्य में पूर्ण रूप से सफल हो गए तो वह दिन दूर नहीं जब हर व्यक्ति के घर में प्रतिदिन यज्ञ होगा। इसलिए हम सभी को इस प्रयास में अपना पूर्ण सहयोग देना है। इस वर्ष अपने आस-पास जितने लोगों ने यज्ञ किया है, अगले वर्ष उससे भी अधिक लोगों को यज्ञ करने के लिए प्रेरित करना है। इसी प्रकार अगर हम वर्ष दर वर्ष वृद्धि करते रहे तो हम अपने लक्ष्य में पूर्ण रूप से सफल हो जाएंगे।

इस वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के आह्वान पर जिन लोगों ने अपने-अपने घरों में यज्ञ किया है या दूसरों को यज्ञ करने के लिए प्रेरित किया हैं, उस सबका हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। हमें यह संकल्प करना है कि इस महामारी की विकट परिस्थितियों में प्रतिदिन यज्ञ करते हुए अपने आस-पास के वातावरण को शुद्ध करने का प्रयास करेंगे। यज्ञ हमारे दैनिक दिनचर्या का हिस्सा होना चाहिए। जिस प्रकार हम अपने सभी कार्य नियमित रूप से करते हैं उसी प्रकार यज्ञ को नियमित रूप से करने का हम सभी प्रयास करें। अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस लोगों को एकजुट करने का प्रयास है और लोगों को मुख्यधारा में जोड़ने का प्रयास है। हम इसे अपने जीवन में कितना महत्व दे पाते हैं, यह हमारे ऊपर निर्भर करता है। 3 मई को अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस पर लोगों ने जो उत्साह दिखाया है वह सराहनीय है। हमें इसी प्रकार अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए अपने ऋषि-मुनियों की पद्धति को पुनर्जीवित करना है, अपने खोये हुए गौरव को पुन: लौटाना है और विश्व गुरू की पदवी को प्राप्त करना है। हमारा देश अपनी संस्कृति और सभ्यता के बल पर ही विश्वगुरू कहलाता था। हम सभी आर्यों का कर्त्तव्य है कि हम उस प्राचीन संस्कृति और सभ्यता का संवर्धन करें। यज्ञ दिवस उसी दिशा में बढ़ने का एक प्रयास है। जिस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस को विश्व स्तर पर पहचान मिली है, उसी प्रकार यज्ञ को भी उसी मुकाम पर पहुँचाना है।

मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने सभा के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए अपना पूर्ण सहयोग दिया। पूरे पंजाब में लोगों को घर-घर यज्ञ करने के लिए प्रेरित किया। संसार की उपकार करना ही आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। आर्य समाज ने इस महामारी के दौर में महर्षि दयानन्द की उस भावना को सार्थक करने का प्रयास किया। आर्य बन्धुओं! हमें अभी भी सावधान होकर कार्य करना है।

प्रेम कुमार
संपादक एवं सभा महामन्त्री

निराकार ब्रह्म की उपासना कैसे करें?

ले.-स्वामी वेदानन्द सरस्वती, सरस्वती ज्ञान केन्द्र, वेद मन्दिर कुरेशी, उत्तर काशी

इस शंका का समाधान हमें वेदों में ही मिलता हैं। इसको पढ़िये और मनन कीजिये।

ओ३म् तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।

तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।। (यजु. 31.9)

अर्थात्-(तम्) उस (यज्ञम्) पूजनीय (पुरुषम्) परमेश्वर को जो (अग्रतः जातम्) सृष्टि के पूर्व से ही विराजमान है तथा (ये) जो (देवाः) ज्ञानी (साध्याः) साधक (च) और (ऋषयः) ऋषिजन थे (तेन) उन्होंने (बर्हिषि) मानव ज्ञानयज्ञ में (प्रौक्षन्) सींचकर अर्थात् धारण करके (अजयन्त) उसकी पूजा की।

भावार्थ-ज्ञानी, साधक और ऋषिगण सभी उस परमात्मा का अपने अन्तर-हृदय में ध्यान करते हैं। ज्ञान स्वरुप उस परमात्मा की आज्ञानुसार अपने आचरण को पवित्र बनाते हैं। उस परमात्मा की आज्ञा का पालन करना ही उसकी पूजा है।

वह परमात्मा ज्ञानस्वरूप है। मानव मात्र के कल्याण के लिये वह अपने ज्ञान का वेदों के रूप में श्रद्धालु भक्तों के हृदय में प्रकाश करता है।

तस्मात् यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्तस्मादजायत।।

(यजु. 31.7)

अर्थात्-उस (सर्वहुतः यज्ञात्) सब का कल्याण करने वाले पूजनीय परमेश्वर से ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की उत्पत्ति होती है। वही ज्ञान, विज्ञान, कर्म और उपासना कर सकता है। कर्म और उपासना से पूर्व ज्ञान की उपलब्धि अनिवार्य है। ज्ञान की उपलब्धि ध्यान से और वेदों के स्वाध्याय से ही होती है।

देश-देशान्तरों के लोग गंगा, यमुना, गोदावरी आदि नदियों के उद्गम स्थलों की खोज में निकलते हैं। वे उन जलस्रोतों को देखकर प्रफुल्लित होते हैं। किन्तु ज्ञान गंगा का उद्गम स्थल कहां है? यह जिज्ञासा विरले लोगों के दिलों में ही पैदा होती है। जब इस विषय पर विचार किया जाता है तो इस ज्ञानगंगा का उद्गम स्थल मस्तिष्क में ही मिलता है। संसार के ज्ञानी हों या अज्ञानी, सभी लोग सोचने-विचारने का काम मस्तिष्क से ही लेते हैं। किन्तु मस्तिष्क तो शरीर में एक मांस का ही पिण्ड है। उसमें ज्ञान कहां से आयेगा? ज्ञान तो चेतन का गुण-धर्म है।

इस शंका का समाधान भी वेदों से ही होता है। अथर्ववेद का मन्त्र है-

तस्मिन् हिरण्यमये कोषे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठिते।

तस्मिन् यद् यक्षमात्मन्वत् तद्वै ब्रह्मविदो विदुः।। (अथर्व. 10.2.31)

अर्थात्-उस हिरण्यमय कोष में जो तीन अरों के ऊपर अवस्थित है उसी में पूजनीय जीवात्मा का निवास है। उसके अस्तित्व का ज्ञान ब्रह्मविद् व्यक्ति को ही होता है। सामान्यजन अपनी आत्मविस्मृति में ही जीवन जीते हैं। यह अज्ञानता ही जीवात्मा को जन्म-मरण के चक्र में डाले रखती है। योगाभ्यास के द्वारा जब जीवात्मा को अपने स्वरूप का ज्ञान हो जाता है, तो वह जन्म-मरण के इस चक्र से बाहर हो जाता है।

ज्ञान चेतन का ही गुण होता है। जड़ पदार्थों में ज्ञान नहीं होता। आत्मा और परमात्मा दोनों चेतन हैं। दोनों का ही यह ज्ञान गुण है। उनमें भेद केवल यह है कि जीवात्मा अल्पज्ञ है और परमात्मा सर्वज्ञ है। जीवात्मा एकदेशी है, तो परमात्मा सर्वव्यापक है। मस्तिष्क की हृदय गुहा में जो जीवात्मा विराजमान है उसमें सर्वज्ञ, सर्वव्यापक परमात्मा का भी आवास है। वहीं से यह ज्ञान गंगा निःसृत हो रही है। जो व्यक्ति जितना एकाग्रचित्त होकर उस परमात्मा की भक्ति में निमग्न होता है, वह उतना ही अधिकाधिक ज्ञान ज्योति से प्रकाशित हो उठता है। परमात्मा अपने ज्ञान को पहाड़-पत्थरों में यूं ही नहीं फैंक देता। वह उस ज्ञानरुपी अनमोल धन को सत्पात्रों को ही प्रदान करता है। योगनिष्ठ तपस्वी आत्मा ही उस ज्ञान को प्राप्त करती है। ज्ञान सम्पन्न होकर जीवात्मा अपने मन, बुद्धि, शरीर, इन्द्रियों के द्वारा उस ज्ञान को कर्म रूप में अवतरित करता है। उत्तम ज्ञान से उत्तम कर्म निष्पन्न होते हैं। जब ज्ञान और कर्म ये दोनों ही व्यक्ति के पवित्रतम हो जाते हैं, तो व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन ही यज्ञमय हो जाता है। ज्ञान ज्योति के प्रकाश में जीवात्मा अपने स्वरूप का प्रत्यक्ष करता है तथा शरीर, मन, बुद्धि से जो कर्म करता है, वे सब निष्काम भाव से ही पूरे करता है। निष्काम कर्म बन्धन का कारण नहीं होता। याज्ञिक भावना से किये गये निष्काम कर्म ईश्वर की पूजा में समर्पित कर दिये जाते हैं, तो यही ईश्वर उपासना का सर्वोत्तम रूप है।

यजुर्वेद का मन्त्र इसी उपासना पर प्रकाश डाल रहा है-

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

(यजु. 31.16)

अर्थात्-(देवाः) ज्ञानी विद्वान् लोग (यज्ञेन) अपने जीवन यज्ञ से (यज्ञम्) उस पूजनीय यज्ञस्वरूप परमात्मा की (अयजन्त) पूजा करते हैं। उसकी पूजा के (तानि धर्माणि) वे धर्म-कृत्य ही (प्रथमानि) प्रधानतम साधन (आसन्) है। उसी पूजा से (पूर्वे) पूर्वकाल के (साध्याः) साधक लोग और (देवाः) ज्ञानी विद्वान् लोग (यत्र) जहां अमृत सुख भोगते हुए (सन्ति) विराजमान है, वहीं अपने जीवन को यज्ञमय बनाने वाले धीर पुरुष भी (महिमानः) महानता को प्राप्त करते हुए (ते) वे भी (ह) निश्चय से (नाकम्) मोक्ष के आनन्द को (सचन्त) प्राप्त करते हैं। यज्ञ ही ईश्वर पूजा का श्रेष्ठतम उपाय है। यह यज्ञ क्या है? इसको वेद के शब्दों में सुनिये-

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।

दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

एतावद्रूपं यज्ञस्य यद्देवैर्ब्रह्मणा कृतम्।

तदेतत्सर्वमाप्नोति यज्ञे सौत्रामणे सुते।। यजु. 19.31

भावार्थ-परमात्मा सत्य स्वरूप है। उस सत्य स्वरूप परमात्मा का साक्षात्कार करना साधक व्यक्ति का जीवन लक्ष्य होता है। इस जीवन लक्ष्य को पाने के लिये साधक व्यक्ति को चार सीढ़ियां पार करनी पड़ती हैं। उनमें प्रथम सीढ़ी है, सत्य की प्राप्ति और अनृत के त्याग का व्रत लेना। ऐसी प्रतिज्ञा करना कि मरूँ चाहे जीऊं, सत्य को प्राप्त करके ही रहूंगा। यह प्रतिज्ञा ही अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान का पूर्णरूपेण पालन करना, माता-पिता, गुरु, अतिथि, विद्वत्जनों की सेवा-शुश्रूषा, यह सब दीक्षा रूप है। इनका पालन करने वाले व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, आत्मिक उन्नति होती है। जन समाज की सेवा का भी वह पात्र बन जाता है। यही उसकी दक्षिणा है। इस दक्षिणा को पाकर उसके मन में सत्य धर्म के प्रति और श्रद्धा बढ़ जाती है। अन्ततः वह श्रद्धा सत्य स्वरूप परमात्मा की प्राप्ति का साधन बन जाती है। जिस जीवन में व्रत, दीक्षा, दक्षिणा, श्रद्धा और सत्य अवतरित हो जाते हैं, वह जीवन यज्ञमय हो जाता है। यही जीवन यज्ञ का वास्तविक स्वरूप है। इसी में जीवन की सार्थकता है। यही ईश्वर पूजा का सर्वोत्तम उपाय है। दूसरे सब उपाय व्यक्ति को भटकाने वाले हैं। उत्तम ज्ञान व उत्तम कर्म सब प्रभु चरणों में अर्पित कर देना ही उसकी सेवा है। यह यज्ञरूप प्रभु की जीवनयज्ञ द्वारा पूजा का सर्वोत्तम उपाय है। यही उस निराकार ईश्वरोपासना का वैदिक उपाय है।

निराकार की सरल साकार राहें

ले.-दर्शनादेवी भारद्वाज प्रधान, स्त्री आर्य समाज वैदिक आश्रम अवन्तिका I, MIG 45, अलीगढ़

आत्मा जब शरीर को छोड़कर जाती है तब पीछे कोई पद चिन्ह छूटते नहीं हैं। कौन है जो प्राणी मात्र को जन्म देता है? हम इस संसार में स्वयं नहीं आते हैं बल्कि किसी शक्ति के द्वारा भेजे जाते हैं और उसी शक्ति के द्वारा शरीर को छोड़ना भी पड़ता है। असंख्य प्राणी इस संसार में अपना कर्म फल भोगने के लिये आते हैं, फिर एक दिन पटाक्षेप होता है, आखिरी पर्दा गिरता है। न जाने यह मनुष्य अपनी देह छोड़कर कहाँ चला जाता है?

मृत्यु रीशे द्विपदां मृत्यु रीशे चतुष्पदाम्।

तस्मात् त्वां मृत्युर्गोपते रूदभरामि स मा विभे।

(अथर्ववेद 8.2.3)

चाहे जीव दो पद (पैर) वाला हो या चार पद (पैर) वाला हो, मृत्यु का शासन सब पर चलता है। किन्तु जो परमेश प्रभु की शरण में रहता है उसको मृत्यु भयभीत नहीं कर पाती है।

मनुष्य किस दुनियाँ से आया था और किस दुनियाँ में चला गया, पता ही नहीं चलता। कितनी भी कोई आवाजें दे और कितने ही प्यार से पुकारे कि लौट आओ, पर जाने वाला लौट कर नहीं आता। तो कौन है जो आखिरी पर्दा गिरा देता है? एक बार स्वामी विवेकानन्द विश्व धर्म सम्मेलन में अमेरिका गये थे। वहाँ एक अमेरिकन महिला ने स्वामी जी से प्रश्न किया था-

1. What is your God a man?

स्वामी विवेकानन्द ने कहा-No

2. What is your God a woman?

स्वामी जी ने कहा-No

3. What is your God an unmarried woman?

स्वामी जी ने कहा-No

4. What is your God?

स्वामी जी ने कहा-My God is a Mystry. वास्तव में रहस्यमय है हमारा परमात्मा। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड रचकर उसमें छिपा हुआ है अथवा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उसमें निहित है। हम सब उस रहस्यमय नाटककार की कठपुतलियाँ हैं जो संसार रूपी रंगमंच पर अपना-अपना अभिनय करने आती हैं। कौन सी शक्ति है जो इस विशाल संसार को गतिमान रखे हुए है? किसके कारण हृदय में स्पंदन हो रहा है? किसके आदेश से सागर में उत्ताल तरंगें उठती हैं और सिमटती हैं? किसकी शक्ति से बादल गरजते हैं और बरसते हैं? रंग बिरंगी तितलियों में कौन रंग भरता है? कौन है जो जुगनुओं के पंखों में बल्ब की तरह चमक रहा है? कौन है जो चन्द्रमा में शीतलता प्रदान करता है? कौन है जो सूर्य में प्रकाश बन कर चमक रहा है और सम्पूर्ण संसार को ऊर्जा प्रदान कर रहा है? गर्भ में शिशु का निर्माण हो रहा है पर हम नहीं जानते किस तरह इसका विकास होता है? शिशुओं की मनोहारी मुस्कानों में कौन समाया है? कौन सी शक्ति है जो इस विशाल ब्रह्माण्ड को धारण किये हुए है? जन्म, मृत्यु फिर जन्म इसका नियन्ता कौन है? मनुष्य ने ऐसी शक्ति को पहचानने का अनेकों बार प्रयास किया है कि ईश्वर क्या है और कैसा है? कोई तो ऐसी शक्ति होनी चाहिए जो इस विशाल ब्रह्माण्ड को धारण किये हुए इसका संचालन कर रही है। मन में सदैव से उस सर्वोच्च सत्ता के प्रति मानव का झुकाव रहा है अर्थात् उसके प्रति नतमस्तक रहा है। वेदों में कहा है-

यस्य मे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।

यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(ऋ. 10/121/4, यजु. 25/12)

इन विशाल हिममंडित पर्वतों का कौन रचनाकार है? कौन है जो इन पर्वतों पर बर्फ जमा रहा है? ये पर्वतमालाएँ अपनी भुजा उठाकर अपने प्यारे रचनाकार का सन्देश दे रही हैं। विशाल समुद्र अपनी विशाल जलराशि के द्वारा अपनी उत्ताल तरंगों को उछाल कर अपने प्यारे रचनाकार का अभिनन्दन कर रहा है। कल-कल करती नदियों की जलधाराएँ किसके इशारे पर समुद्र में समाहित हो रही हैं? असंख्य भू भागों में फैली हुई हरीतिमा, विभिन्न प्रकार के वृक्ष, फल-फूल, वनस्पतियाँ, औषधियाँ, विभिन्न प्रकार के जल जन्तु, थल पर रहने वाले पशु-पक्षी। अनगिनत दिखाई देने वाले कीटाणु और न दीखने वाले कीटाणु, विभिन्न प्रकार के रहन-सहन और स्वभाव वाले नर-नारियों से भरे हुए संसार का कोई तो रचनाकार होना ही चाहिए। कोई तो ऐसी शक्ति होनी चाहिए जो इन सबका संचालन कर रही है। यह वायु का बहना और उसका मन्द-मन्द मधुर संगीत, पक्षियों का कलरव, भौरों की मधुर गुनगुनाहट, मेंढकों की टर्र-टर्र, मयूर का नृत्य, कोयल का मधुर राग में गाना, विभिन्न प्रकार के फूलों को सौन्दर्य व उसकी सुगन्ध, समुद्र की अतल गहराई, आकाश की ऊँचाई को छूते हुए वृक्षों के झुरमुटों की सनसनाहट कहाँ तक कहूँ? वह हर जगह अपने समाये होने का सन्देश दे रहा है। हम किस देव की उपासना करें, किसको पुकारें? **एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।** वह एक ही है। ज्ञानी लोग तरह-तरह से उसकी चर्चा करते हैं। वही हमारा बन्धु है, सखा है। सच्चा मित्र तो परमात्मा ही है, उससे बढ़कर हमारा और कोई मित्र हो ही नहीं सकता। वही हमारा माता-पिता, सगा सम्बन्धी सब कुछ है। हे संसार के स्वामी, तेरी दंड व्यवस्था और तेरे नियमों को देखकर मेरा मस्तिष्क स्वतः ही श्रद्धा से झुक जाता है। क्योंकि तेरे नियमों के परिपालन से कोई व्यक्ति असीम पुरस्कारों से मंडित हो जाता है। मैं प्रार्थना करती हूँ, तू मुझ पर सदा प्रसन्न रहे, तेरे आशीर्वादों की मुझ पर अनवरत वर्षा होती रहे।

संसार क्या है? संसार एक प्रवाह है जो निरन्तर गतिशील है। इसमें प्रतिक्षण कुछ न कुछ घटित होता रहता है। नदियाँ प्रवाहमान हैं। नदियों का जल निरन्तर आगे बहता रहता है। वायु निरन्तर बह रही है, प्रकाश की किरणें फैल रही हैं। वृद्ध अपना पंचतत्वों का शरीर त्याग रहे हैं और नये शिशु रूप में आ रहे हैं। यह नवीनता, निरन्तरता और गतिशीलता ही इस संसार का सौन्दर्य है। संसार परिवर्तनशील है, परन्तु इसके पीछे जो सत्ता काम कर रही है वह कभी नहीं बदलती, सदा एक रूप रहती है। जिसकी इच्छा मात्र से सारा संसारचक्र घूम रहा है, जिसने हमारे हृदय को धड़काया है, जिसके प्रभाव से पूरे शरीर में रुधिर का संचार हो रहा है, सूचनाएँ मस्तिष्क में पहुँच रही हैं। हम खाते हैं रोटी सब्जी पर बनता है रुधिर। प्राण निरन्तर गतिशील है, वह कभी नहीं सोता। कौन है वह तत्त्व जिसने अंग-प्रत्यंगों का निर्माण किया है और सब नियम बनाए हैं? पूरे शरीर में चमड़ी फैली हुई है। इस चमड़ी रूपी वस्त्र में उसने एक भी सिलाई या टांका नहीं लगाया है। कैसी अद्भुत कारीगरी है? पूरे शरीर में हड्डियों के रूप में खम्बे लगाये हैं। कोहनी, घुटनों में ऐसा कौन सा स्प्रिंग या कील लगाई है जो मुड़ने, खड़े होने और बैठने में हमारी सहायता करती है। वही एक चेतन सत्ता है जो हमारी वाणी को आवाज दे रही है, हाथों में काम करने की व पैरों में चलने की शक्ति दे रही है। उसे वेद में बताया गया है-

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमा-दित्यवर्णं तमसः परस्तात्।

तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।

(यजु. 31/18)

उस महान पुरुष को जानो, जो सर्वत्र व्यापक है और स्वयं प्रकाश रूप है। जो आदित्य वर्ण है, अज्ञान अन्धकार से बिल्कुल परे है। उसको जानकर ही मृत्यु रूपी दुःख से पार पाया जा सकता है। उस परम पद को पाने के लिए इसके अलावा अन्य कोई मार्ग नहीं है।

इतना वर्णन मैंने इसलिए किया कि उस जगत् नियन्ता परमेश्वर की सर्वव्यापकता को समझ लिया जाए। इस संसार में कुछ जीव बुद्धिमान अथवा कुबुद्धिमान होते हैं जो ईश्वर की सत्ता मानने से इन्कार कर देते हैं और स्वयं को नास्तिक कहलाने में गौरवान्वित समझते हैं। उन्हें यह भी पता नहीं होता कि परमात्मा उनका

(शेष पृष्ठ 6 पर)

लुधियाना आर्य समाज (इतिहास के पन्नों से)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बंधित आर्य समाजों में लुधियाना आर्य समाज का विशेष स्थान रहा है। उसकी स्थापना २९ अक्तूबर सन् १८८२ के दिन लाला रामजीदास खजान्ची, बाबू शिवशरण दास ठेकेदार, लाला लाजपतराय थापर, बाबू उमाप्रसाद और लाला तुलसीदास आदि सज्जनों के प्रयत्न से हुई थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् १८७७ के अप्रैल मास में तीन सप्ताह के लगभग लुधियाना में निवास किया था। उनके व्याख्यानों का जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा था, और उसी के परिणाम-स्वरूप बाद में वहाँ आर्य समाज की स्थापना हुई थी। समाज के प्रथम प्रधान लाला शिवशरणदास थे, और मन्त्री पण्डित सालिगराम थे। कोषाध्यक्ष के पद पर लाला रामजीदास की नियुक्ति हुई थी। समाज का पहला सत्संग स्थापना के दिन २९ अक्तूबर को कटरा नोहरियां में एक छोटे से चौबारे में हुआ, और एक साल पश्चात् ९ अक्तूबर, १८८३ को लाला रामजीदास के मकान पर, जो चौड़ा बाजार में था। आर्य समाज का प्रथम वार्षिकोत्सव मनाया गया।

प्रारम्भ के समय में आर्य समाज लुधियाना द्वारा वेद-प्रचार के लिए निम्नलिखित साधन प्रयोग में लाये जाते थे-(१) प्रतिदिन सायंकाल महर्षिकृत वेदभाष्य की कथा की जाती थी। (२) रविवार के साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त प्रत्येक शुक्रवार को दो घण्टे के लिए धर्मचर्चा का आयोजन किया जाता था, जिसमें सबको शंका समाधान की स्वतन्त्रता रहती थी। (३) प्रत्येक बुधवार को नगर के भिन्न-भिन्न मुहल्लों में वैदिक धर्म का प्रचार किया जाता था। (४) संस्कृत तथा आर्य भाषा (हिन्दी) की उन्नति के लिए समाज के पदाधिकारी विशेष ध्यान देते थे। (५) अन्तरंग सभा में भिन्न-भिन्न समुदायों के प्रतिनिधि लिये जाते थे। (६) 'सभासदों की उपस्थिति पर विशेष ध्यान दिया जाता था। जिस सभासद की अनुपस्थितियाँ अधिक होती थी उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता था या उसे अनुपस्थित रहने का सन्तोषजनक कारण बताना होता था। सर्वसाधारण जनता से घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करने के लिए समाज के अधिकारी घर-घर जाकर समाज फण्ड के लिए आटा एकत्र किया करते थे, जिससे दस रुपये मासिक प्राप्त हो जाते थे। उस समय १० रुपये का जो मूल्य था, उसे देखते हुए यह राशि कम नहीं थी। इस पद्धति का लाभ यह था कि लोगों का आर्य समाज से सम्पर्क बना रहता था, और उनमें वैदिक धर्म के लिए श्रद्धा उत्पन्न होती थी। शुरू में लुधियाना आर्य समाज का कोई भवन या मन्दिर नहीं था। साप्ताहिक सत्संग भी नगर के भिन्न-भिन्न स्थानों पर हुआ करते थे। पर सन् १८८९ में जब समाज ने लुधियाना के पुराने हिन्दू स्कूल को अपने अधिकार में ले लिया, तो साप्ताहिक सत्संग भी वही पर किये जाने लगे। सन् १९०९ में शहर के बीच में एक उपयुक्त स्थान जिसे आजकल साबुन बाज़ार कहते हैं। समाज मन्दिर के लिए तय कर लिया गया, जिस पर बाद में सब आवश्यक इमारतें बना ली गई। लुधियाना समाज की यह सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नाम रजिस्टर्ड है। जून, सन् १८९० में लुधियाना में स्त्री आर्य समाज की भी स्थापना हो गई थी। इसकी आर्य सदस्याएँ वैदिक धर्म के प्रचार के लिए सदा तत्पर रही है। उन द्वारा प्रतिवर्ष तीजी के त्यौहार पर प्रचार की विशेष व्यवस्था की जाती थी। इस समाज का वार्षिकोत्सव भी प्रतिवर्ष मनाया जाता रहा है।

वैदिक धर्म के प्रचार के लिए आर्य समाज लुधियाना ने जो प्रयत्न किया, उसकी कुछ बातें उल्लेखनीय हैं। सामान्यतया, प्रचार के लिए समाजों द्वारा व्याख्यानों का ही आश्रय लिया जाता है। पर लुधियाना समाज ने इस प्रयोजन से कथाओं की भी व्यवस्था की। स्वामी सत्यानन्द जी महाराज आर्य समाज के अत्यन्त योग्य व मृदुभाषी संन्यासी थे। वह प्रतिवर्ष दस-बारह दिन लुधियाना समाज में कथा द्वारा अमृतवर्षा किया करते थे, जिससे जनता बहुत प्रभावित होती थी और वैदिक धर्म के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा रखने लगती थी। उनके अतिरिक्त गुरुकुल रायकोट के आचार्य स्वामी गंगागिरि भी समय-समय पर लुधियाना आकर उपनिषदों की कथा किया करते थे। लुधियाना में आर्य समाज का जो वातावरण उत्पन्न हुआ, उसमें ये कथाएँ बहुत सहायक सिद्ध हुई। लुधियाना आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव तो प्रतिवर्ष नियमपूर्वक हुआ ही करता था, पर मेलों और विशेष उत्सवों पर समाज द्वारा प्रचार का विशेष प्रबन्ध भी किया जाता था। घाट शिवदयाल पर मेला वसन्त में, छपार में मेला छपार पर, मेला रोशनी व रामलीला के अवसरों पर मेलों के स्थान पर और भाई वाले आदि मेलों पर आर्य समाज की ओर से धर्म-प्रचार किया जाता था। प्रारम्भ के वर्षों में होली के त्यौहार पर आर्य लोग उजले वस्त्र पहनकर प्रभु कीर्तन करते हुए बाजारों में जुलूस निकाला करते थे, जो होली मनाने का एक नया व उत्कृष्ट ढंग था।

संकलन विजय सरीन

साभार: आर्य समाज का इतिहास

पृष्ठ 2 का शेष-मान्तः स्थुर्नो अरातयः

कृपालु देवा कृपा कीजो हम नहीं सुपथ को छोड़ें।

यज्ञादि शुभ कार्यों से हम कभी नहीं मुख मोड़ें।।

अदाशीलता, कृपणता को सदा दूर हम रखें।

परहित और दान भाव से मन को भरपूर हम रखें।।

अदानी होना कृतघ्नता है, यह पाप कदापि करें नहीं।

'सहस्र हस्त संकिरः' के पथ पर चलने से डरें नहीं।।

यज्ञ संस्कृति को अपनायें दान संकल्प हमारा हो।

'मान्तः स्थुर्नो अरातयः' भगवन् आदर्श हमारा हो।।

पृष्ठ 5 का शेष-निराकार की सरल साकार राहें

भी सन्तानवत् पालन करता है। ऐसे भी लोग देखे गये हैं जो जीवन में उपलब्धियाँ प्राप्त करते हैं किन्तु मृत्यु वेला में जब उनका प्राण खिंचता प्रतीत होता है तब उसका आभास करते हैं, किन्तु अब उसकी उपस्थिति का बखान करने की स्थिति में नहीं रहते। इसका सटीक उदाहरण वैज्ञानिक लाल्पलास और नेपोलियन बोनापार्ट का है।

प्रथम दृश्य-लाप्लास ने भौतिक विज्ञान का एक मोटा ग्रन्थ लिखा और उसे पढ़ने के लिये अपने मित्र नेपोलियन को दिया। पढ़ने के बाद नेपोलियन ने उसे वापस करते हुए ग्रन्थ की प्रशंसा की और कहा-मित्र, ग्रन्थ बहुत अच्छा है पर आपने उसमें कहीं भी ईश्वर की चर्चा नहीं की। लाप्लास ने कहा-मित्र, मैंने कहीं भी ईश्वर की आवश्यकता नहीं समझी।

दूसरा दृश्य-अब लाप्लास मृत्यु शय्या पर है। उसने अपने मित्र नेपोलियन को बुलवाया और कहा-मित्र, कोई शक्ति है जो मेरे प्राणों को खींच रही है, मैं मरना नहीं चाहता। अस्तु! ईश्वर की सत्ता को मरते समय उसने स्वीकार किया और कहा उस ग्रन्थ में लिख दो कि ईश्वर है।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

ईश्वर पाप क्षमा नहीं करते हैं

ले.-उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ वैदिक प्रवक्ता, आगरा

वेद, उपनिषदों एवं धर्मशास्त्रों का यह मान्य सिद्धान्त है कि 'पाप पापी को ही लौट आता है' अर्थात् मनुष्य द्वारा किया गया पाप ईश्वर द्वारा क्षमा नहीं किया जाता है, वरन् उसका फल दु:ख रूप में उसी को ही भोगना पड़ता है।

असद् भूम्या: समभवत् तद् द्यामेति महद् व्यच:।
तद्वै ततो विधूपायत्प्रत्यक् कर्तारमृच्छतु।।

अथर्व. 4/19/6

भूमि में अपना प्रकाश नहीं है। भूमि अन्धकारमयी है। पाप भी अज्ञान या अन्धकार से होता है। मनुष्य पाप करने के लिए गुप्त स्थान ही चुनता है। वेद में इस बात का वर्णन अलंकारमयी भाषा में इस प्रकार है-''असद् भूम्या: समभवत्''-पाप एकान्त या अज्ञान में होता है किन्तु यह न तो नष्ट होता है, न छिपता है। करते समय पाप छोटा-सा लगता है परन्तु-''तद् द्यामेति महद् व्यच:।'' यह बड़े विस्तार वाला होकर फैलकर आकाश तक जाता है अर्थात् पाप की बात खुल जाती है, दूर-दूर तक फैल जाती है और उसके ताप दु:ख रूप फल से कर्ता बच नहीं पाता है, क्योंकि पाप नहीं हुआ है। किया हुआ पाप पीछा कर रहा है।''तद्वै ततो विधूपायत्प्रत्यक् कर्तारमृच्छतु''-पाप धीरे-धीरे पकता है। वह आकाश में और अधिक तपकर या शक्तिशाली बनकर उल्टा कर्ता को मिलता है अर्थात् उसी को नष्ट करता है या दु:ख देता है।

ईश्वरीय वाणी अथर्ववेद में ही एक अन्य मन्त्र में (12/3/48) स्पष्ट लिखा है ''पक्तारं पक्व: पुनराविशाति'' पकाने वाला जैसी चीज पकाकर तैयार करता है, वैसी चीज उसे स्वयं भी भोगने को प्राप्त होती है अर्थात् कर्मों का फल कर्ता को ही मिलता है। इस मन्त्र में आता है-'न किल्विषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रै: सममान एति' अर्थात् किसी पीर-पैगम्बर गुरु और औलिया की सिफारिश, मित्र आदि, गंगा स्नान, कथा, तीर्थयात्रा, भगवान के भोग आदि पापों को न कम कर सकते हैं और न क्षमा कर सकते हैं। यह स्पष्ट घोषणा केवल वेद ही करता है-यह वेद की अपनी विशेषता है।

यह मान्यता अन्य मतों में नहीं है। ईसाइयों की तो यह मान्यता है कि प्रभु यीशु मसीह हमारे दुष्कर्मों के फल दु:ख से जीवों को बचाने के लिए स्वयं सूली पर चढ़ गये। उन पर जो भी अपनी निष्ठा ले आता है अर्थात् ईसाई बनने पर पापियों को पाप का फल नहीं भुगतना पड़ता।

इस्लाम के अनुसार भी कलमा पढ़ा और जन्नत के अधिकारी हुये। जन्नत में जाने या प्रवेश के लिए कर्मों की पवित्रता की पाबन्दी नहीं है।

पाप धीरे-धीरे पकता है-इस सम्बन्ध में पं. सन्तराम बी.ए. ने अपनी पुस्तक 'जन्म-मरण की पहेली' में एवं डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार वायस चान्सलर-गुरुकुल कागड़ी हरिद्वार ने अपनी पुस्तक 'वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार' में एक मार्मिक उदाहरण दिया है जिसे हम देना यहां उचित समझते हैं। वे लिखते हैं-महाराष्ट्र के पहाड़ी प्रदेश में एक डाकू रहता था। लूट-खसोट करना उसका व्यवसाय था। दैव योग की बात है कि एक बनिया बहुत-सी सम्पदा साथ लिए उस पहाड़ी मार्ग से अपने देश जा रहा था। वह डाकू के पंजे में पड़ गया। उसने डाकू से गिड़गिड़ा कर कहा कि मेरी धन सम्पदा बेशक ले लो, परन्तु मेरे प्राण छोड़ दो अर्थात् मुझे मारो मत। किन्तु निर्दयी डाकू ने उसकी प्रार्थना अनसुनी कर दी और धन-दौलत लूटने के साथ उसकी हत्या भी कर डाली। बहुत-सा धन माल हाथ लग जाने के कारण अब उस डाकू ने डकैती करना छोड़ दिया और एक धनी व्यक्ति की भांति रहने लगा। उसकी कोई सन्तान न थी। बुढ़ापे की अवस्था में पहुंचने पर एक सुकुमार पुत्र का जन्म हुआ। वह बेटा वृद्ध पिता को प्राणों से भी प्रिय था। पालन पोषण में अधिक व्यय करते हुये विवाह योग्य होने पर उसने एक सुन्दरी कन्या से उसका विवाह कर दिया। वृद्ध की मानो सभी कामनायें पूर्ण हो गई। उसके कुछ काल उपरान्त उस लड़के को एकाएक ऐसा रोग हो गया कि उसे खटिया पकड़नी पड़ी। पिता ने बहुत धन खर्च करके बड़े-बड़े प्रसिद्ध वैद्यों से उसकी चिकित्सा कराई और चतुर पण्ड़ितों से पूजा-पाठ कराकर उसे बचाने के लिए भरसक यत्न किया, परन्तु उसका कोई उपाय सफल नहीं हुआ। धीरे-धीरे सभी ने उसके जीने की आशा छोड़ दी।

इसी बीच एक दिन प्रात:काल रोगी को कुछ आराम सा मालूम हुआ। प्रसन्नता से उसके पिता का मुख मण्डल खिल उठा। वह बेटे के पलंग पर एक ओर जा बैठा। पुत्र ने संकेत से बताया कि वह पिता से कुछ गुप्त बात करना चाहता है। तब नौकर-चाकरों वैद्यों को दूसरे कमरे में भेज दिया गया। एकान्त पाकर पुत्र ने अपने पिता से कहा''बाबू जी! आपने मुझे पहचाना भी?'' पिता ने समझा, लड़का बेहोशी में बक रहा है। उसने उसे दिलासा देकर कहा-''बेटा! यह क्या कहते हो? तुम मेरे पुत्र हो, मैं तुम्हारा पिता हूँ। वर्षों से हम साथ-साथ रह रहे हैं।

बेटे ने कहा-''मैं यह नहीं पूछता। आपको उस दिन की याद है जिस दिन आपने अमुक पहाड़ी रास्ते में एक बनिये को जान से मारकर उसका सर्वस्व लूट लिया था? बूढ़े के सिर पर मानो गाज गिरी। उसने सोचा कि उससे यह बात किसने कह दी। उसने पूछा-''यह सब क्या कहते हो? वैद्य को बुलाता हूँ।

बेटे ने कहा-''देखिये, मेरे पास अब समय नहीं है। मरने से पहले मैं इस रहस्य को कह देना चाहता हूँ। मैं वही बनिया हूँ जिसे आपने बुरी तरह से मार डाला था। मैं इस जन्म में आपका बेटा हूँ। मैं जब से जन्मा हूँ तब से लेकर आज तक मेरे लिए जितना रूपया पैसा खर्च किया गया है, उसका हिसाब करने से आपको यह ज्ञात हो जायेगा कि उस बनिये का जितना धन आपने लूटा था, उतना ही यह खर्च हुआ है। अब मैं जाता हूँ। उस रुपये का ब्याज प्राप्त करने के लिए मैं अपनी छोटी आयु की पत्नी छोड़ जाता हूँ। इसका पालन आपको जीवन भर करना है।

इतना कह कर बेटे की मृत्यु हो जाती है। दु:ख पाप-अपराध रूपी वृक्ष का ही विषमय फल है। जो पाप-प्रवृत्ति से ईश्वरीय आज्ञाओं की अवज्ञा करते हैं अथवा पीड़ित, आर्त, भीत या शरणागत पर अमानुषिक अत्याचार करते हैं, अगले जन्म में या वर्तमान में उसकी ऐसी ही दुर्दशा होती है।

इसलिए पाप करने से बचें, क्योंकि इसके दु:ख रूपी फल से बचा नहीं जा सकता है। पुण्य या धर्म का मार्ग ही सुखकर है। प्रभु सर्वव्यापक, न्यायकारी और हमारे कर्मों का द्रष्टा है। उससे हम बच नहीं सकते हैं, ऐसा विश्वास रखना चाहिए।

बृहस्पतिर्न: परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायो:।
इन्द्र पुरस्तादुत मध्यतो न: सखा सखिभ्यो वरीय: कृणोतु।।

-अथर्व० ७.५१.१

भावार्थ-परमात्मा आगे, पीछे, ऊपर नीचे से सब शत्रुओं से हमारी रक्षा करे। वह परमेश्वर हमारे लिए आगे से और मध्य से विस्तीर्ण स्थान निर्माण करे। जैसे एक मित्र अपने मित्रों के लिए स्थान बनाता है।

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्य:।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम्।।

-अथर्व० १.३१.४

भावार्थ-जो श्रेष्ठ पुरुष अपनी माता-पिता आदि कटुम्बियों और अन्य माननीय पुरुषों का सत्कार करते और गौ अश्व आदि पशुओं से लेकर सब जीवों तथा संसार के साथ उपकार करते हैं वे पुरुषार्थी उत्तम धन, उत्तम ज्ञान और उत्तम कुल पाते और सूर्य के समान होकर बड़ी आयु को प्राप्त होते हैं।

आर्य समाज मोगा में 230 लोगों ने लगाई वैक्सीन

आर्य समाज मोगा में निशुल्क वैक्सीनेशन कैम्प लगाया गया जिसमें लगभग 230 लोगों ने कोरोना का टीका लगवाया। आर्य समाज मोगा के प्रधान श्री नरेन्द्र सूद की देखरेख में इलाका निवासी टीकाकरण करवाते हुये।

कोरोना महामारी के प्रकोप से लोगों को बचाने के लिए आर्य समाज मन्दिर मोगा द्वारा मुफ्त कोविड-19 टीकाकरण शिविर का आयोजन आर्य माडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल मोगा में किया गया। इस कैंप की शुरूआत मोगा हलके के विधायक डा. हरजोत कमल ने खुद को कोरोना वैक्सीन की दूसरी डोज लगवा कर की। इस मौके पर डाक्टर हरजोत कमल ने समूह इलाका निवासियों से अपील करते हुए कहा कि कोरोना महामारी जो संसार में बहुत तेजी से फैल रही है उससे बचने के लिए हम सभी को कोरोना वैक्सीन लगवानी चाहिए तथा दूसरे लोगों को भी जागरूक करना चाहिए।

इस अवसर पर पार्षद डा. रीमा सूद, डा. नवीन सूद, आर्य माडल स्कूल के अध्यक्ष सत्य प्रकाश उप्पल, मैनेजर अमित बेरी, उपाध्यक्ष निर्मल शर्मा, वीणा चुघ, राजीव गुलाटी, प्रवीण सिंगला, आर्य समाज मोगा के प्रधान नरेन्द्र सूद, पी.एन.मित्तल, विजय मदान, नवल सूद, सुरेश मल्होत्रा, सुरेन्द्र अग्रवाल, जतिंदर गोयल, इन्द्रपाल पलता, पार्षद गुरप्रीत सिंह सचदेवा, पार्षद जसप्रीत सिंह विक्की, सरपंच संत नगर आदि ने कहा कि आज जिस प्रकार पूरे देश में कोरोना महामारी फैल रही है हम सभी को आगे आकर अधिक से अधिक लोगों को कोरोना वैक्सीन के बारे में जागरूक करके कोरोना वैक्सीन के कैंप लगाने चाहिए, ताकि हम अपने मोगा हलके से कोरोना महामारी को दूर कर सकें। इस कैंप के दौरान सिविल अस्पताल से आई माहिर डाक्टरों की टीम ने 230 के करीब 45 वर्ष से अधिक लोगों को कोविड वैक्सीन लगाई।

– अमित बेरी मंत्री आर्य समाज

आर्य समाज शहीद भगतसिंह कालोनी जालन्धर में निशुल्क कोरोना वैक्सीनेशन कैम्प लगाया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह कालोनी जालन्धर में लगाये गये निशुल्क कोरोना वैक्सीनेशन कैम्प की शुरूआत करते हुये पूर्व सी.पी.एस. कृष्ण देव भंडारी एवं आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य जी। चित्र दो में आर्य समाज के महामंत्री श्री हर्षलखनपाल जी वैक्सीन लगवाते हुये जबकि चित्र तीन में श्रीमती डिम्पल भाटिया जी वैक्सीन लगवाते हुये।

भगत सिंह कॉलोनी में स्थित आर्य समाज मन्दिर में सेवा ही संगठन प्रधानमन्त्री के द्वारा आयोजित कोविड-19 मुफ्त वैक्सीनेशन कैंप लगाया गया। आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य ने कहा कि इस कोरोना महामारी से बचाव के हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के नेतृत्व में आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर सेवा भाव से यह कार्य कर रहा है। आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर समाज के कल्याण के लिए हमेशा अग्रणी रहता है। उन्होंने कहा कि कोरोना वैक्सीन को लेकर लोग भ्रम की स्थिति में हैं, जबकि यह कारगर साबित हो रही है। वैक्सीन लगाकर हम अपने आपको सुरक्षित तो कर रहे हैं, वहीं हम प्रशासन और सरकार द्वारा चलाए मिशन कोरोना मुक्त भारत हमारा अभियान का हिस्सा भी बन सकते हैं। इसलिए हमें बेफिक्र होकर कोरोना वैक्सीन लगानी चाहिए। कैंप में मुख्य तौर से भाग लेने पहुंचे पूर्व सीपीएस श्री कृष्ण देव भण्डारी और भाजपा जिला अध्यक्ष सुशील शर्मा ने कहा कि वैक्सीन को लेकर लोगों को गुमराह किया जा रहा है जो बिल्कुल गलत है। वैक्सीन एकदम सुरक्षित है। समाजसेवी संस्थाओं को इस अभियान को जन-जन तक पहुंचाना चाहिए। अधिक से अधिक लोग वैक्सीन लगवाकर अपने आपको सुरक्षित कर सकें। उन्होंने कहा कि अपनी टीम के साथ स्वास्थ्य विभाग द्वारा चलाए टीकाकरण अभियान को लेकर नगर के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर लोगों को टीकाकरण के लिए प्रेरित करें। आमजन से अपील करते हुए कहा कि इस वैश्विक महामारी को हल्के में न लें, प्रशासन का सहयोग करने के साथ-साथ सरकार के निर्देशों का पालन करें। वैक्सीनेशन कैंप में 140 लोगों ने वैक्सीन लगवाई। कैंप में आर्य समाज के प्रधान रणजीत आर्य, महामन्त्री हर्ष लखनपाल व अन्य अधिकारियों ने डॉ. हेमन्त मल्होत्रा जी को सत्यार्थ प्रकाश देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर पार्षद सुशील कालिया, स्वर्ण शर्मा, वेदप्रकाश भाटिया, सुरिन्द्र खन्ना, चौधरी हरिचंद्र, भूपेन्द्र उपाध्याय, कुबेर शर्मा, नंदिनी शर्मा, विजय कुमार चावला, सुरेन्द्र अरोडा, राजीव शर्मा, हितेश स्याल, प्रदीप अवस्थी, राजेश कुमार, उमेश बत्रा, ललित मोहन कालिया, श्रीमती जगदीश भाटिया, सुदर्शन आर्य, शिखा आर्या, गौरव आर्य, राजेश वर्मा, बलराज मिश्रा, राजीव शर्मा, केवल कृष्ण चोपड़ा, राकेश बावा, ओम प्रकाश मैहता, श्रीमती पूनम मैहता, डिंपल भाटिया, सुनीत भाटिया, नरेन्द्र तलवाड, प्रवीन लखनपाल, केदार नाथ शर्मा, नरेन्द्र गुप्ता, सुभाष कौशिश, अशोक अरोडा, अनीता अरोड़ा आदि मौजूद रहे।

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित।
सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org